Chapter 8

bihar board class 9th hindi notes पधारो म्हारे देश

लेखक – परिचय

-अनुपम मिश्र

पधारो म्हारे देश

अनुपम मिश्र का जन्म सन् 1948 ई में हुआ । वे हिंदी के मूर्धन्य कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र के सुपुत्र हैं । उनके जीवन के प्रारंभिक वर्ष छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गांव में बीते । उनकी प्रारंभिक शिक्षा हैदराबाद एवं मुंबई में हुई । बाद में वे दिल्ली आ गए , और यहीं से संस्कृत में एम . ए , किया । उन्होंने सन् 1969 ई . में गाँधी शांति प्रतिष्ठान में कार्यभार संभाला और तभी से इस संख्या के पर्यावरण प्रकोष्ठ में सेवारत हैं ।
लंबे अरसे तक नगरीय जीवन बिताने पर भी गाँव का मोह नहीं हटा और इसलिए ग्रामीण संस्कृति को झलक उनके साहित्य में दिखाई देती है । मिश्रजी गाँधीवादी विचारक और एक सजग सामाजिक कार्यकर्ता हैं । पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर उनकी पैनी दृष्टि रही है । पानी की समस्या पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया और उन्हीं समस्याओं से संबंधित कार्य – क्षेत्र में ये जुटे रहते है।
अनुपम मिश्र की रचनाओं में एक और भारत के गाँवों की मिट्टी की सौंधी गंध है तो दूसरी और ज्वलंत समस्याओं के प्रति विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण । इसीलिए अकाल , वर्षा , पानी जैसी समस्याओं ने उनके लेखन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है । उनकी भाषा सरल सहज बोलचाल की भाषा है । आंचलिक राष्ट्र उनकी रचनाओं में खूब बोलते हैं । अनुपम मित्र की प्रमुख रचनाएँ हैं – आज भी खरे हैं तालाब राजस्थान की रजत बूंदे , हमारा पर्यावरण पुस्तक के निर्माण में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही है । ‘
पधारो म्हारे देश में लेखक ने हमारे जन – जीवन में रचे बसे राजस्थान को जनसंस्कृति को सामाजिक किया है और उससे जुड़ी लोक परंपराओं का सुन्दर सहज शब्दावली में वर्णन किया है । उनकी दृष्टि में जलसंरक्षण हमारी ग्रामीण संस्कृति की पहचान है और जीवंत समाज एवं राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है ।
‘ जल ही जीवन है ‘ की सार्थकता को स्पष्ट करती यह रचना आज की युवा पीढ़ी की नैसर्गिक जल सोनों और जालसंरक्षण के पारंपरिक उपायों से परिचित कराती है और उनके महत्त्व के प्रति हमें नए सिरे से जागरूक बनाती है । लोकजीवन में बोली जानेवाली हिंदी के ताजे मुहावरों के साथ विषय में गंभीरता और शैली के प्रवाह का जीवंत रूप उनके गद्य को नई आभा से मंडित करता है । यह एक ऐसा गद्य है जिसमें हिंदी भाषा की आंचलिकता समृद्धि और हिंदी के लशाक का यथार्थबोध एक साथ प्रकट होता है ।

कहानी का सारांश

” पधारो म्हारे देस ‘ अनुपम मिश्र द्वारा रचित फीचर है । अनुपम मिश्र ने पर्यावरण के महत्व को समझते हुए पानी संरक्षण की सीख दी है । वे एक गाँधीवादी विचारक और सणण सामाजिक = कार्यकर्ता हैं ।
आज राजस्थान की धरती अथाह बालुका राशि से पटी है । यहाँ कभी समुद्र की लहरें उठा करती थी पर आज यहाँ बालू की लहरें उठती – गिरती हैं ।
यहाँ पानी की बड़ी कमी हैं । वर्षा कम होती है और गर्मी खूब पड़ती है । फिर भी यहाँ के लोग खुशहाल हैं । राजस्थान के मरुदेश में दुनिया के अन्य ऐसे प्रदेशों की तुलना में न सिर्फ जनसंख्या का घनत्व अधिक है बल्कि , उसमें जीवन की सुगंध है , जीवन का कलरव है । वहाँ के लोगों ने प्रकृति से मिलने वाले इतने कम पानी का रोना नहीं रोया बल्कि उसे चुनौती मान कर उसका विकल्प तलाशा और अपने काम में सफल भी हुए ।
यहाँ पिछले एक हजार साल के दौर में जैसलमेर , जोधपुर , बीकानेर और फिर जयपुर जैसे बड़े शहर भी बहुत व्यवस्थित ढंग से बसे हैं । इनकी आबादी भी अच्छी खासी थी । इनमें से प्रत्येक शहर – अलग दौर में लंबे समय तक सत्ता – व्यापार और कला का प्रमुख केन्द्र भी बना रहा था । जिस समय मुम्बई , कोलकाता , चेन्नई जैसे आज के बड़े शहरों का नामो निशान नहीं था उस समय राजस्थान के कई जिले विदेशी व्यापार के केंद्र थे । इतना सब

https://www.evidyarthi.in/

कुछ प्रकृति द्वारा पानी नहीं दिए जाने के बाद भी हुआ ।
असल में वहाँ के लोगों ने परनी का संग्रह करना सीखा । उन्होंने वर्षा की बूंदों को सोने – चाँदी की तरह संजो कर रखा है । इसका उन्होंने कभी यश या प्रशंसा बटोरने के लिए प्रचार नहीं किया । आज देश के लगभग सभी छोट – बड़े शहर , कई गाँव , कई राज्यों की राजधानियाँ और देश की राजधानी तक अच्छी वर्षा के बावजूद पानी के मामले में दरिद्र हो चुकी हैं । इसके पहले की जल का अकाल पड़े सबको राजस्थान के प्राकृतिक तरीके से जल संग्रह के तरीके को अपनाना चाहिए ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/